R.N.I. No. : DELBIL / 2001/4685 Postal regn. No. : A.L.G. / 29 / 2021-23

मूल्य-4 रुपये, वर्ष-22, अङ्क-6 जून 2022 1

श्री आदिनाथ-कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, अलीगढ़ (उ०प्र०) का
मासिक मुख समाचार पत्र

मङ्गलायतन

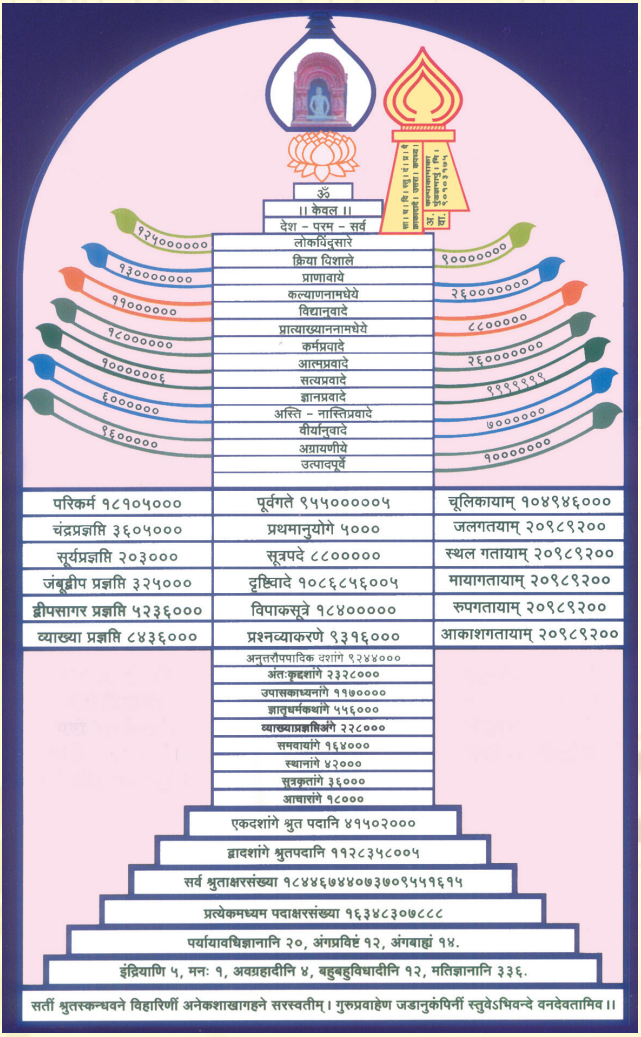

देवलाली शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर की झलकियाँ

मङ्गलायतन

श्री आदिनाथ-कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, अलीगढ़ (उ.प्र.) का

मासिक मुखपत्र

वर्ष-22, अङ्क-6 (वी.नि.सं. 2548; वि.सं. 2079) जून 2022

नित पीज्यो धी धारी....

नित पीज्यो धी धारी, जिनवाणी सुधा सम जानिके ॥ टेक ॥

वीर मुखारविंदतै प्रगटी, जन्म-जरा भयटारी।
गौतमादि गुरु-उर घट व्यापी, परम सुरुचि करतारी ॥1 ॥

सलिल समान कलिलमलगंजन, बुधमनरंजन हारी।
भंजन विभ्रम धूलि प्रभंजन, मिथ्या जलद निवारी ॥2 ॥

कल्याणकतरु उपवनधरिनी, तरिनि भवजलतारी।
बन्धविदारन पैनी छैनी, मुक्ति-नसैनी सारी ॥3 ॥

स्वपरस्वरूप प्रकाशन को यह, भानु कला अविकारी।
मुनि-मन-कुमुदिनि-मोदन शशिभा, समसुख सुमन सुवारी ॥4 ॥

जाको सेवत बेवत निजपद, नसत अविद्या सारी।
तीन लोकपति पूजत जाको, जान त्रिजग हितकारी ॥5 ॥

कोटि जीव सों महिमा जाकी, कहि न सके पविधारी।
'दौल' अल्पमति केम कहै यह, अधम उधारन हारी ॥6 ॥

साभार : मंगल भक्ति सुमन

संस्थापक सम्पादक
स्व. पण्डित कैलाशचन्द्र जैन, अलीगढ़
स्व. श्री पवन जैन, अलीगढ़

सम्पादक
डॉ. सचिन्द्र शास्त्री, मङ्गलायतन

सह सम्पादक
पण्डित सुधीर जैन शास्त्री, मङ्गलायतन

सम्पादक मण्डल
ब्रह्मचारी पण्डित ब्रजलाल शाह, वढ़वाण
बाल ब्रह्मचारी हेमन्तभाई गाँधी, सोनगढ़
डॉ. राकेश जैन शास्त्री, नागपुर
श्रीमती बीना जैन, देहरादून

सम्पादकीय सलाहकार
डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर
पण्डित विमलदादा झाँझरी, उज्जैन
श्री चिरंजीलाल जैन, भावनगर
श्री प्रवीणचन्द्र पी. वोरा, देवलाली
श्री वसन्तभाई एम. दोशी, मुम्बई
श्री श्रेयस् पी. राजा, नैरोबी
श्री विजेन वी. शाह, लन्दन

मार्गदर्शन
डॉ. किरीटभाई गोसलिया, अमेरिका
पण्डित अशोक लुहाड़िया, अलीगढ़

इस अङ्क के प्रकाशन में सहयोग-

स्व० श्री शीतलप्रसाद शकुन्तलादेवी जैन

C/o. आजाद ट्रेडिंग कम्पनी
जैन मन्दिर के नीचे,
लाल कुँआ,
बुलन्दशहर-203001

क्या - कहाँ

सौराष्ट्र की श्रुतवत्सल संत त्रिपुटी	5
श्रुत पंचमी	7
परमश्रुत षट्खंडागम	9
षट्खंडागमरूप अमृत का फल	12
श्री समयसार नाटक.....	13
श्रुत परम्परा एवं श्रुतज्ञान का स्वरूप	22
मुख्य तिथि-पर्व	24
प्रेरक-प्रसंग	25
जिस प्रकार उसी प्रकार	26
समाचार-दर्शन	27

शुल्क :
वार्षिक : 50.00 रुपये
एक प्रति : 04.00 रुपये

जिनवाणीरूपी गंगा के प्रवाह को अच्छिन्न रखनेवाली

सौराष्ट्र की श्रुतवत्सल संत त्रिपुटी

(षट्खंडागम की रचना का पावन इतिहास)

जिनवाणी के प्रवाह में से अंग-पूर्व के एक देश के ज्ञाता धरसेनाचार्य षट्खंडागम के विषय के ज्ञाता थे। वे सौराष्ट्र देश में गिरनार की चन्द्रगुफा में ध्यान करते थे। नंदिसंघ की पट्टावलि के अनुसार वे महावीरस्वामी की ३१ वीं पीढ़ी में (वीर निर्वाण के लगभग ६४३ वर्ष पश्चात्) हुए थे। वे अंगपूर्वों के एक देश ज्ञाता तथा महान विद्वान, श्रुतवत्सल थे। महावीरस्वामी की परंपरा से चले आ रहे श्रुतज्ञान का प्रवाह अच्छिन्न रहे, ऐसी श्रुतभक्ति से प्रेरित होकर, महिमा नगरी के मुनि सम्मेलन में उन्हें पत्र लिखकर भेजा।

महिमा नगरी के मुनि सम्मेलन में जब धरसेनाचार्य का पत्र मिला, तब उनके श्रुतरक्षा संबंधी अभिप्राय को जानकर संघ से दो साधुओं को चुनकर गिरनार भेजा; वे मुनि विद्या ग्रहण करने में तथा उसका स्मरण रखने में समर्थ, अत्यंत विनयी एव शीलवान थे। उनके देश, कुल और जाति शुद्ध थे तथा वे समस्त कलाओं में पारंगत थे। जब वे दो मुनिवर इस ओर आ रहे थे, उसी समय यहाँ धरसेनस्वामी ने ऐस शुभ स्वप्न देखा कि दो श्वेत वृषभ आकर विनयपूर्वक वंदना कर रहे हैं। इस स्वप्न द्वारा उन्होंने जाना कि आनेवाले दोनों मुनि विनयवान तथा धर्म धुरी को वहन करने में समर्थ हैं....

उसी समय 'जयउसुयदेवदा' (श्रुतदेवता जयवंत हो) ऐसे आशीर्वचन उनके मुख से निकले। दूसरे दिन दोनों मुनिवर गिरनार आ पहुँचे और विनयपूर्वक उनके चरणों की वंदना की। दो दिन पश्चात् धरसेनाचार्यदेव ने उनकी परीक्षा की। एक मुनि को अधिक अक्षरवाला और दूसरे मुनि को हीन अक्षरवाला विद्यामंत्र देकर तथा दो उपवासपूर्वक उसे साधने को कहा। विद्यायें सिद्ध हुई, तब एक देवी बड़े दाँतवाली और दूसरी देवी एक नेत्रवाली इसप्रकार कुरूप दिखायी दीं। उसे देखकर चतुर साधुओं ने जान लिया कि अपने मंत्रों में कुछ त्रुटि है; क्योंकि देव विकृतांग नहीं होते।

उन्होंने विचारपूर्वक मंत्र में अधिक और हीन अक्षर को घटा-बढ़ाकर पुन: विद्या की साधना की, जिससे दोनों देवियाँ अपने प्राकृतिक सौम्यरूप में प्रगट हुई। गुरु ने उनकी इस कुशलता से जान लिया कि सिद्धांत पढ़ाने के लिये वे योग्य पात्र हैं। फिर उन्होंने, उन्हें सिद्धांत का अध्ययन कराया; वह श्रुताभ्यास असाढ़ शुक्ल ११ के दिन समाप्त हुआ; और उस समय भूत जाति के देवों ने पुष्पोहार के द्वारा शंखादि वाद्यों के मंगलनाद सहित दोनों साधु की महापूजा की, इसलिये आचार्य ने उनका नाम भूतबलि रखा। दूसरे साधु की दंतपंक्ति अस्तव्यस्त थी वह देवों ने सीधी कर दी, इसलिये उनका नाम पुष्पदंत रखा। यही दोनों आचार्य षट्खंडागम के रचयिता हुए।

इसप्रकार धरसेनस्वामी, पुष्पदंतस्वामी और भूतबलिस्वामी इन श्रुतवत्सल संतों की त्रिपुटी ने एक साथ सौराष्ट्र की धरा को पावन करके श्रुत का प्रवाह बहाया है।

षट्खंडागम में सत्प्ररूपणा अधिकार के कर्ता पुष्पदंतस्वामी हैं और शेष समस्त ग्रंथ के कर्ता श्री भूतबलि स्वामी हैं। भूतबलि आचार्य ने षट्खंडागम की रचना पुस्तकारूढ़ करके तथा उसे ज्ञान का उपकरण मानकर 'जेठ शुक्ला पंचमी' के दिन चतुर्विध संघ के साथ अंकलेश्वर में उस श्रुत की महा पूजा की, इसलिये उस दिन की प्रख्याति जैनों में श्रुतपंचमी के रूप में चली आ रही है और उस दिन श्रुत की पूजा की जाती है।

इस षट्खंडागम सिद्धांत पर महान विस्तृत धवला टीका के रचयिता श्री वीरसेनाचार्य की महिमा के संबंध में श्री जिनसेनस्वामी ने कहा है कि—'षट्खंडागम में उनकी वाणी अस्खलितरूप से प्रवर्तती थी। उनकी सर्वार्थगामिनी नैसर्गिक प्रज्ञा को देखकर किसी बुद्धिमान को सर्वज्ञ की सत्ता में शंका नहीं रही थी।' [पारदृश्वाधि विश्वानां साक्षादिव स केवली] वीरसेनस्वामी की धवला टीका ने षट्खंडागम के सूत्रों को चमका दिया।

नमस्कार हो इन जिनवाणी रक्षक श्रुतवत्सल संत भगवतों को।

(ब्र० हरिलाल जैन)

सिद्ध पद के साधक श्रुतधर संत

श्रुत पंचमी

भगवंत संतों के कहे हुए श्रुत-(शास्त्र) अतीन्द्रिय आत्मसुख की रुचि कराके बाह्य विषयों से विरक्ति कराते हैं। नमस्कार हो उस श्रुत को और श्रुतप्रकाशक सन्तों को!

आज श्रुतपंचमी का अर्थात् ज्ञान की अखंड आराधना का पवित्र दिवस है। भगवान तीर्थंकरदेव की वाणी की अच्छिन्न धारा को परम दिगम्बर संतों ने प्रवाहित कर रखा है; वह वाणी सिद्धस्वरूपी शुद्धात्मा का प्रकाशन करती है। अंतर में सिद्धपद को साधते-साधते भावश्रुतधारक संतों ने भगवान की वाणी झेलकर द्रव्यश्रुत की परम्परा भी बना रखी है।

जो अंतर्मुख होकर गिरिगुफा में स्वानुभव द्वारा चैतन्य की आराधना करते थे—ऐसे संतों ने (धरसेन, पुष्पदंत और भूतबलि स्वामी ने) षट्खण्डागमरूप में भगवान की जिस वाणी को सुरक्षित रखा, उसके बहुमान का महामहोत्सव आज अंकलेश्वर (गुजरात) में मनाया गया था। उसके टीकाकार श्री वीरसेन स्वामीजी महान समर्थ अगाध बुद्धि के सागर थे। अहा! श्रुत के समुद्र समान उन दिगम्बर संतों को देखते ही सर्वज्ञ की तथा जिनशासन की प्रतीति हो जाती थी। सिद्धपद की आराधना कैसे हो—वह बात इन संतों ने सिद्धांत में (पंचास्तिकाय आदि में) बतलायी है। सिद्धपद कैसा है ?—

स्वयमेव चेतक सर्वज्ञानी सर्वदर्शी होत है;
अर निज अमूर्त अनंत अव्याबाध सुख को अनुभवे।

(पंचास्तिकाय : २९)

आत्मा में ज्ञान-दर्शन-सुखस्वभाव है; उसमें क्लेश नहीं है। अहा! निरालम्बी आत्मदशा! सिद्ध भगवंत पूर्ण निरालंबी हुए हैं; सिद्धपद की साधना करनेवाले संत-मुनि की दशा भी अंतर में अत्यंत निरालंबी होती है।

जिसमें वस्त्रादि का भी आलंबन नहीं है—ऐसा मुनिपद अंतर की अत्यंत निरालंबी दशा के बिना नहीं होता। सिद्धपद के साधक उस संत मुनि को चैतन्य में ऐसी लीनता हुई है कि बाह्य का अवलंबन छूट गया है। ऐसे संत सिद्धपद को साधते-साधते कभी शास्त्रों की रचना करके जगत पर उपकार करते हैं। धरसेनस्वामी, पुष्पदंतस्वामी, भूतबलीस्वामी, यतिवृषभस्वामी, वीरसेनस्वामी आदि संतों ने सिद्धपद को साधते-साधते सिद्धांतशास्त्रों की (षटखंडागम तथा कषायप्राभृत की) रचना करके भगवान की वाणी के प्रवाह को अक्षुण्ण रखा है। उन संतों की दशा अलौकिक थी। वह 'षटखण्डागम' (तथा धवल-महाबन्ध-जयधवल टीका) आदि भी अध्यात्मग्रंथ हैं; गुणस्थानादि में आत्मा के सूक्ष्म परिणामों का उनमें बोध कराया है। उस षटखण्डागम की समाप्ति का महामहोत्सव चतुर्विध संघ ने अंकलेश्वर में दो हजार वर्ष पहले श्रुतपंचमी के दिन किया था—वही महान दिवस आज का है—(ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी)।

—ऐसे संत कहते हैं कि अरे जीव! तू ज्ञान-दर्शन सुख से भरा हुआ है, उसमें दृष्टि नहीं करता और बाह्य विषयों में दृष्टि करके क्लेश भोगता है। बाह्य विषय—कि जिनमें तेरा अस्तित्व ही नहीं है—उनमें तू सुख मानता है, और अपनी ओर नहीं देखता कि जिसमें अनंत सुख भरा है... फिर तुझे सुख कहाँ से प्राप्त होगा? बाह्य विषयों में जहाँ तू सुख मानता है, वहाँ वास्तव में सुख नहीं परंतु दुःख ही है-क्लेश ही है। अपने स्वभाव में दृष्टि कर तो विषयों के क्लेशरहित, अतीन्द्रिय शांत सुख भरा है। उसमें न कोई अंकुश है, न कोई विघ्न है। तुझे परमेश्वर को देखना और परमेश्वर होना हो तो परमेश्वर की खोज अपने आत्मा में ही कर। पूर्ण ज्ञान और पूर्ण सुख का अचिंत्य ऐश्वर्य तुझमें ही भरा है। स्वकीय सुख के अनुभव में पर से कोई प्रयोजन नहीं है; उसमें पर का किंचित् अवलंबन नहीं है, पर की कोई ओट या आधार नहीं है; अपने स्वभाव की ही ओट लेने से आत्मसुख का अनुभव होता है—ऐसा तेरा अस्तित्व है।

अरे रे, जीव दु:ख बाँधने के अनेक परिणाम करते हैं और दु:ख भोगते समय हाय-हाय मचाते हैं। सुख की इच्छा रखते हैं परंतु सच्चे सुख का उपाय नहीं करते। इन्द्रिय सुखों में ही सुख मानकर उसमें अटके रहते हैं, परंतु उसमें तो दु:ख का ही अनुभव है; किंचित् सुख नहीं है। सुख क्या है, उसकी तो जीव को खबर भी नहीं है, तो वेदन कहाँ से होगा? जहाँ विषयातीत सुख का एक अंश भी वेदन में आये, वहाँ सारे जगत के विषयों के अवलंबन की बुद्धि उड़ जाये और सर्व विषयों से विरक्ति हो जाये।

भगवंत संतों द्वारा कथित श्रुत-शासन अतीन्द्रिय आत्मसुख की रुचि कराके बाह्य विषयों से विरक्ति कराते हैं;—ऐसे श्रुत को और श्रुतधर संतों को नमस्कार हो!

साभार : आत्मधर्म (हिन्दी), वर्ष -22, अंक-2

परमश्रुत षट्खंडागम

जो श्रुत के बहुमान में श्रुतपंचमी जैसा पर्व चला आया और थोड़े ही वर्षों के पहले जिन शास्त्रों का दर्शन भी मुश्किल था, उस पवित्र जिनवाणी षट्खंडागम की ताड़पत्र पर लिखी हुई मूलप्रति के (यहाँ सामने दिये हुए चित्र में) दर्शन होते हैं। ये प्रतियाँ अभी भी मूडबिद्रि के सिद्धांतबस्ति नाम के मंदिर में विराजमान हैं। सभी यात्रीगण अत्यंत भक्तिपूर्वक उसके दर्शन करते हैं, और हम सबको पूज्य कानजी स्वामीजी के साथ दो बार उस जिनवाणी के दर्शन-स्पर्शन का महाभाग्य मिला है। चित्र में सात ताडपात्र दिख रहे हैं उनका परिचय:—

1. यह ताडपत्र षट्खंडागम-धवल टीका ग्रंथ का है, उसके मध्य में पाँच तीर्थंकरों के चित्र हैं दोनों छोर पर प्रवचन करते हुए आचार्य और श्रोता-श्रावकों का दृश्य है।

2. यह भी धवलग्रंथ का है, बीच में तीर्थंकरदेव विराजमान हैं और दोनों ओर 7-7 भक्तजन वंदना कर रहे हैं।

3. यह ताड़पत्र ऊपर कन्नड लिपि में हस्तलिखित धवल शास्त्र है।

4. यह ताड़पत्र ऊपर कन्नड लिपि में महाबंध टीका जो छठवें खंड की टीका है।

5. यह ताड़पत्र श्री जयधवल टीका ग्रंथ का है जो कषाय पाहुड सूत्र की टीका है, उस पत्र के दोनों ओर चित्र है दूसरे छोर पर श्री बाहुबलि भगवान का चित्र है।

6. यह महाधवल (महाबंध टीका) का 27वाँ पत्र है बीच में कन्नड़ लिपि में लेख तथा दोनों छोर पर चित्र है।

7. यह ताड़पत्र 'त्रिलोकसार' ग्रंथ का है। उनमें जिसका वर्णन है, उनके चित्र उस पत्र में दिये हैं, बीच में तीन लोक का चित्र है, नंदीश्वर, जंबुद्वीप, छह परावर्तन दर्शक काल चक्र, समवसरण, ढाईद्वीप आदि के चित्र हैं।

यह प्रतियाँ देखकर उनके मूल लेखकों ने श्रुतज्ञान की कितनी भक्तिपूर्वक उनका आलेखन किया होगा...? वह देखने में आता है। श्रुतज्ञानी सैकड़ों वर्षों से इन ताड़पत्रों की रक्षा करते आये हैं। आज हमारे महाभाग्य से उनका प्रकाशन हुआ, हम स्वाध्याय कर सकते हैं, षट्खंडागम में पाँच खंड की टीका धवला 16 पुस्तक और छठवें खंड की टीका महाबंध जिनकी 7 पुस्तक हैं और कषायपाहुड़ की टीका जयधवला है, जिनकी 9 पुस्तक छप गईं, शेष प्रकाशन रुक रहा है जिसकी जिज्ञासुजन बड़ी उत्सुकता से राह देखते हैं। इन धवल सिद्धांत के ताड़पत्रों की लंबाई 2 फुट, चौड़ाई 2 इंच है। पत्रों की संख्या 592 है - प्रत्येक पत्र पर करीब 14 पंक्ति हैं प्रति पंक्ति में करीब 138 अक्षर हैं, जो श्लोक संख्या अंदाज 120 3/4 होती है, संपूर्ण ग्रंथ 71484 श्लोक जितना है।

(धवल टीका में करीब 72000 श्लोक माने जाते हैं।)

मूडबिद्री में धवल सिद्धांत की ताडपत्रीय-प्रति एक ही नहीं है किंतु तीन हैं। महाधवल के ताडपत्रों की लंबाई दो फुट चार इंच और चौड़ाई ढाई

इंच है, पृष्ठ संख्या 200 है। ताडपत्रों के बीच में दो छेद दिखाई देते हैं जो डोरी पिरोकर बांधने के लिये है। एक वजनदार सूई द्वारा लिखने से ताडपत्र में अक्षर खुद जाते हैं और फिर उनमें स्याही भरने से वे अक्षर स्पष्ट पढ़े जा सकते हैं।

जयधवल सिद्धांतक ताडपत्र की लम्बाई सवा दो फुट और चौड़ाई ढाई इंच है, पृष्ठ संख्या 518 है।

पवित्र सिद्धांत की यह प्रतियाँ मूडबिद्री के जिस जिनमंदिर में विराजमान हैं उसका चित्र सामने दिया गया है, उस मंदिर को 'सिद्धांत मंदिर' सिद्धांतबसदि अथवा गुरुबसदि कहा जाता है। उसमें मूलनायक पार्श्वनाथ भगवान हैं। सुप्रसिद्ध रत्नमय जिनबिम्ब भी इसी मंदिर में विराजमान हैं। इसप्रकार जहाँ जिनदेव और जिनवाणी विराज रहे हैं, ऐसे इस मूडबिद्री तीर्थधाम को नमस्कार हो। उस पावन श्रुत के जन्मधाम राजगृही-विपुलाचल तीर्थ को नमस्कार हो। श्रुतधर संतों ने जहाँ उस श्रुत का प्रवाह मुनियों को दिया, उस पवित्र गिरनार—चंद्रगुफा को नमस्कार हो और और संतों ने उस पावन श्रुत को पुस्तकारूढ़ करके जहाँ श्रुत की महा पूजा की उस श्रुतधाम अंकलेश्वर को नमस्कार हो।

भावश्रुतधारी सर्व वीतरागी संतों को नमस्कार हो। (ब्र० हरिलाल जैन)

साभार : आत्मधर्म (हिन्दी), वर्ष -22, अंक-2

जबलपुर में 5 जून से 12 जून तक 13वाँ आवासीय बाल शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में लगभग 300 विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रतिदिन पूजन, भक्ति, 2 सामूहिक कक्षायें, 4 सामान्य कक्षायें, भक्ति, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि के माध्यम से संस्कारों का बीजारोपण किया गया। मुख्य विद्वान के रूप में पण्डित मनोज जैन एवं मंगलार्थी अनुभव जैन के निर्देशन में यह शिविर सानन्द सम्पन्न हुआ। मंगलार्थी समकित शास्त्री।

षट्खंडागमरूप अमृत का फल

(लेखक ब्र० हरिलालजी जैन)

सर्वज्ञ परंपरा से आये हुए षट्खंडागम की प्रामाणिकता दर्शाकर उन जिनवाणीरूप अमृत के अभ्यास का फल मोक्ष बतलाकर आचार्यदेव ने मोक्षाभिलाषी भव्य जीवों को जिनवाणी के अभ्यास की प्रेरणा की है। धवल पुस्तक ९, पृष्ठ १३२-३३ में श्री वीरसेन स्वामी, वीर जिनेन्द्र के मोक्षगमन बाद लोहाचार्य तक की परम्परा दिखाकर पश्चात् कहते हैं कि- लोहाचार्य का स्वर्गगमन होने पर आचारांगरूपी सूर्य अस्त हो गया। पीछे के आचार्य उन सब अंग-पूर्व के एकदेशरूप 'पेज्जदोस' और 'महाकम्मपयडि पाहुड' आदि शास्त्र के धारक हुए, इसप्रकार प्रमाणीभूत महर्षिरूप प्रणाली द्वारा आकर महाकर्म प्रकृति-प्राभृतरूपी अमृतजल प्रवाह धरसेन भट्टारक को प्राप्त हुआ।

उन्होंने भी गिरिनगर की चंद्रगुफा में संपूर्ण महाकर्म प्रकृति-प्राभृत भूतबली और पुष्पदन्त मुनियों को अर्पित किया। पश्चात् श्रुतरूपी नदी के प्रवाह के व्युच्छेद के भय से भूतबली भट्टारक ने भव्यजनों के अनुग्रहार्थ महाकर्म प्रकृति-प्राभृत का उपसंहार करके छह खंड (षट्खंडागम) की रचना की अत: त्रिकाल विषयक समस्त पदार्थों को विषय करनेवाले प्रत्यक्ष केवलज्ञान द्वारा प्रभावित होने से और प्रमाणीभूत आचार्यों की परंपरा से आने के कारण दृष्ट-इष्ट विरोध का अभ्यास होने से यह ग्रन्थ प्रमाणरूप है। (पश्चात् उनके अभ्यास की सिफारिस करते हुये श्री वीरसेनस्वामी कहते हैं कि—)

इस कारण मोक्षाभिलाषी भव्य जीवों को इसका अभ्यास करना चाहिये परंतु 'यह ग्रन्थ तो अल्प है (बारह अंग का अल्प ही भाग है) अत: वह मोक्षरूपी कार्य के उत्पन्न करने में असमर्थ है'—ऐसी शंका न करना; क्योंकि अमृत के सौ घड़े पीने का जो फल है, वह एक अंजलि प्रमाण अमृत पीने में भी प्राप्त होता है।

साभार : आत्मधर्म (हिन्दी), वर्ष -22, अंक-2

श्री समयसार नाटक पर पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के धारावाही प्रवचन

प्रथम अधिकार का सार

यहाँ पण्डित बनारसीदासजी दृष्टान्त देते हैं कि जब कपड़े पर मैल जम जाता है तब कपड़ा मलिन कहलाता है, लोग उससे ग्लानि करते हैं और उसे निरुपयोगी बताते हैं; परन्तु विवेक दृष्टि से देखा जाये तो कपड़ा अपने स्वरूप से स्वच्छ है, मैल तो कपड़े से भिन्न वस्तु है। इस कारण साबुन और पानी का निमित्त मिलते ही मैल कपड़े से भिन्न पड़ जाता है। यदि वह कपड़े के साथ तन्मय होवे तो भिन्न नहीं पड़ सकता। भिन्न था, इसलिए भिन्न पड़ जाता है।

कपड़े की तरह कर्म और राग से सहित आत्मा को मलिन कहना व्यवहारनय का विषय है। आत्मा को मैल वाला मानना और उसकी ग्लानि करना और उसको निरुपयोगी मानना अज्ञान है। मलिनता है उसे जानना अवश्य; परन्तु उसको आत्मा से तन्मय नहीं मानना। आत्मा उससे भिन्न है और भिन्न पड़ सकता है।

श्रोता:- व्यवहार का ज्ञान भी सम्यग्ज्ञान है न ?

पूज्य गुरुदेवश्री:- शुद्ध स्वभाव के ज्ञान बिना अकेले व्यवहार का ज्ञान वह अज्ञान है। आत्मा का अनुभव होने के पश्चात् उसके ज्ञान को सम्यक् कहा जाता है। निश्चय शुद्ध ज्ञानानन्द स्वभाव का ज्ञान होने के पश्चात् ज्ञानी पर्याय में रही हुई मलिनता को व्यवहार से जानते हैं। उससे मैं मलिन हो गया हूँ ऐसा वे नहीं मानते हैं।

अरे ! यह चैतन्य बादशाह पामर होकर पड़ा है। मुझे बीड़ी के बिना नहीं चलता...मुझे गर्म-गर्म रोटी के बिना नहीं चलता... अमृत की डकार लेनेवाला आत्मा दुर्गन्ध की डकार में पड़ा है, यह इसकी मूढ़ता है। अहो ! आत्मा आनन्दस्वरूप है, उसका संग छोड़कर यह स्त्री का संग खड़ा किया है। भाई ! तेरे स्वरूप में यह संग नहीं है। संग का राग भी तेरे स्वरूप में नहीं है।

राग और कर्म की मलिनता होने पर भी मेरा प्रभु उससे भिन्न है ऐसा देखना, वह निश्चयनय का विषय है। मैं राग से भिन्न हूँ ऐसा परलक्ष्यी ज्ञान होवे, वह भी मूलवस्तु नहीं है; परन्तु स्व के लक्ष्यपूर्वक, स्व के आश्रयपूर्वक जो ज्ञान होता है और जिसमें आनन्द आता है, वह मूलवस्तु है।

अभिप्राय यह है कि वास्तव में जीव को कर्म कालिमा लगती ही नहीं। जैसे मैल वास्तव में वस्त्र के भीतर प्रवेश नहीं कर गया, ऊपर ही है; उसीप्रकार ऊपर से-संयोग में जीव शरीर और कर्म से बँधा है। वह बंधन भेदज्ञानरूपी साबुन और समरसरूपी नीर-जल से भिन्न पड़ जाता है। आत्मा को राग और पुण्य-पाप से भिन्न जानने पर जो समता प्रगट होती है उससे आत्मा का मैल धुल जाता है यह वास्तविक सामायिक है। इसके भान बिना कितनी ही क्रिया, व्रत, तप, जप करे; तो भी वे सब एक बिना की शून्य समान निष्फल हैं।

जिसको चेतना चक्रवर्ती महाराज का ज्ञान नहीं है, राग से भेदज्ञान नहीं है और भेदज्ञान के द्वारा जिसको समतारूपी शान्ति प्रकट नहीं हुई है वह रागादि मेल से भिन्न नहीं पड़ सकता है।

तात्पर्य यह है कि जीव को देह से भिन्न शुद्ध-बुद्ध जाननेवाला निश्चयनय है और शरीर से अभिन्न, राग-द्वेष-मोह से मलिन, कर्म के आधीन कहनेवाला व्यवहारनय है। यह बात अन्य को समझाना ज्ञान नहीं है, वह तो मात्र विकल्प है। अन्दर में ज्ञानानन्द स्वभाव सन्मुख झुकाव होकर जो ज्ञानानन्द प्रकट होता है, वह सच्चा ज्ञान और आनन्द है। आनन्दसहित ज्ञान होता है, उसे ही निश्चयनय कहते हैं।

प्रथम दशा में इस नय ज्ञान द्वारा जीव की शुद्ध और अशुद्ध परिणति को समझकर अपने शुद्ध स्वरूप में लीन होने का नाम अनुभव है, इसी का नाम धर्म है। छहकाय की दया पालना, कंदमूल न खाना, रात्रि भोजन नहीं करना ऐसे विकल्प होते हैं; परन्तु वे धर्म नहीं है। छहकाय के जीव जीवें या मरें, वे अपने कारण से जीते-मरते हैं। इस जीव के कारण अन्य जीव का जीवन

अथवा मरण नहीं होता। फिर भी मैं उन्हें जिलाता हूँ- यह मान्यता भ्रमरूप है। तत्त्वों की भिन्नता और अनेकता का पता नहीं होने से ऐसा भ्रम होता है। अनेक तत्त्व अनेकपने स्वयं के कारण से रहते हैं, अन्य तत्त्व उनको रखे अथवा मारे ऐसा तत्त्व का स्वरूप ही नहीं है। अज्ञानी जीव मात्र मैं दूसरों को जिलाता हूँ अथवा मारता हूँ- ऐसा अभिप्राय करता है।

पर्याय में राग की अशुद्धता है, उसका ज्ञान करके फिर उससे हटकर शुद्ध चैतन्य भगवान के स्वभाव का अनुभव करना ही तात्पर्य-प्रयोजन है, यह सार है। यही जीव को जानने का सार है, परन्तु यह सुना ही नहीं हो, उसको नया लगता है। सम्प्रदाय में तो लोगों ने प्रौषध करो- अष्टमी चतुर्दशी को उपवास करो, कंदमूल मत खाओ, छह पर्व में ब्रह्मचर्य पालन करो वह धर्म है-ऐसा सुना है, इसलिये यह धर्म की व्याख्या नई लगती है।

अनुभव होने के पश्चात् तो नयों का विकल्प भी नहीं रहता है। यह पर्याय अशुद्ध है और मैं त्रिकाल शुद्ध हूँ-ऐसा भेदरूप विकल्प भी अनुभव में नहीं रहता। अरे! जहाँ विकल्प का भी आश्रय नहीं है वहाँ अन्य किसका आश्रय होगा ?तीनलोक के नाथ तीर्थंकर देव फरमाते हैं कि तुझे तेरी शरण है, तू स्वयं ही वीतरागमूर्ति है, तेरा पुरुषार्थ तेरे हाथ में है; कोई अन्य तुझे पुरुषार्थ करा नहीं देगा।

श्रोता:- श्रीमद्जी ने कहा है न कि तुझे सम्यक्त्व होने के पश्चात् पन्द्रह भव में मोक्ष न होवे तो मेरे पास से लेना ?

पूज्य गुरुदेवश्री:- इसका अर्थ यह है कि ऐसी दशा होने के पश्चात् पन्द्रह भव में मोक्ष होता ही है; नहीं होवे ऐसा बनता ही नहीं, यह वहाँ कहने का आशय है।

आत्मा में अनन्त गुण किसप्रकार हैं, उनकी अवस्था क्या है, वह कैसे प्राप्त हो यह सब जानने के लिए प्रथम अवस्था में (नय) साधक है-जरूरी है। वस्तु को सिद्ध करने के लिए नय के विकल्प होते हैं; परन्तु जहाँ अनुभव होता है, वहाँ नय के विकल्प कोई काम नहीं करते। अनुभव में किसी नय का काम नहीं है।

तुमको तुम्हारे व्यापार में कितने पैसे की आमदनी हुई, कितना खर्च हुआ, कितना लाभ हुआ यह सब पता होता है; परन्तु तुम्हारे निजघर में क्या-क्या भरा है यह पता नहीं है। आत्मा अनन्त गुणों का समुद्र है। उसमें ज्ञान-दर्शन, वीतरागता आदि अनन्त गुण हैं।

इस भगवान आत्मा को पहिचानना है न! तो इसके द्रव्य-गुण-पर्याय का ज्ञान करना पड़ेगा। द्रव्य-गुण-पर्याय का स्वरूप समझे बिना ऊपर-ऊपर से आत्मा-आत्मा करने से आत्मा की पहिचान नहीं होती है। स्वभाव क्या है, विभाव क्या है, रत्नत्रय क्या है- यह सब समझना पड़ेगा।

सम्प्रदाय में संवत् 1976 के साल में एक प्रश्न हुआ था कि 'सामायिक' है, वह द्रव्य है, गुण है या पर्याय है?तो कहते थे हमारे गुरु ने ऐसा सिखाया नहीं है। गुरु के ऊपर दोष डाल दिया।

यहाँ कहते हैं कि गुणों के समूह को द्रव्य कहते हैं। जीवद्रव्य में ज्ञान, दर्शन, आनन्द आदि अनन्त गुण हैं। जैसे शक्कर में मीठापन, सफेदी आदि है; वैसे ही आत्मा में ज्ञान, दर्शन, स्वच्छत्व, विभुत्व आदि अनन्त गुण हैं और उनकी अवस्था, वह उनकी पर्याय है। वस्तु के द्रव्य-गुण-पर्याय को पहिचाने बिना कितनी ही क्रिया करे; परन्तु उससे क्या लाभ होगा?अतः वस्तु के स्वरूप को भलीभाँति समझना चाहिए। जैसे सोने मे पीलापन, चिकनापन, वजन आदि गुण हैं; वैसे ही आत्मा में चैतन्य, सुख, वीर्य इत्यादि गुण हैं और वस्तु की हालत को पर्याय कहते हैं।

जीव की पर्याय कौनसी?कि जीव की नर, नारक, तिर्यञ्च, देव आदि तथा राग-द्वेष, जानना-देखना आदि ये जीव की पर्यायें हैं। पर्याय को हालत, दशा और अवस्था भी कहते हैं। गुण वस्तु की त्रिकाली शक्ति है और पर्याय वस्तु की वर्तमान अवस्था है। ऐसे गुण और पर्याय के बिना वस्तु नहीं होती और वस्तु अर्थात् द्रव्य के बिना गुण और पर्याय नहीं होते। द्रव्य और गुण त्रिकाल रहते हैं और पर्याय एकसमय की होती है। द्रव्य-गुण और पर्याय एक-दूसरे के बिना नहीं होते हैं। अतः द्रव्य और गुणपर्यायों में अव्यतिरिक्त

भाव है। जैसे सोना एक वस्तु है। उसमें पीलापन, चिकनापन आदि गुण और हार, कुंडल, कड़ा इत्यादि पर्यायें सोने से भिन्न नहीं है। उसीप्रकार जीव एक वस्तु है। उसमें त्रिकाली ज्ञान, दर्शन, सुख, वीर्यादि गुण हैं और उसकी अवस्था में अपने स्वरूप का भान न होवे तो पुण्य-पाप व शरीरादि को अपना मानता है। यह जीव की विभावदशा-विभावपर्याय है और अपने स्वरूप का भान होवे तो सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रादि पर्याय प्रकट होती है, वह जीव की स्वभाव पर्याय है। वह गुण नहीं है, किन्तु पर्याय है।

जब पर्याय को गौण करके द्रव्य को मुख्य करके कथन किया जाता है, तब उसको द्रव्यार्थिकनय कहते हैं। उसमें मुख्यरूप से द्रव्य का ज्ञान कराया जाता है, उस ज्ञान में द्रव्य का प्रयोजन मुख्य होता है। अरे! इसने कभी द्रव्य को समझने का प्रयत्न नहीं किया है, परिभ्रमण के भाव किये हैं।

मुमुक्षु:- आत्मा समझानेवाले गुरु नहीं मिले तो कहाँ से करे ?

पूज्य गुरुदेवश्री:- स्वयं ने समझने का प्रयत्न नहीं किया, इसलिए गुरु नहीं मिले ऐसा कहा जाता है। वैसे तो जीव अनन्तबार तीर्थंकर के पास जाकर आया है; परन्तु यदि स्वयं नहीं समझे तो दूसरा किसप्रकार समझा देगा ?क्योंकि अपनी अवस्था का परिवर्तन तो स्वयं करे तो होता है, उसे गुरु नहीं कर सकते। गुरु के मिलने पर भी अपना उपयोग जहाँ तहाँ भटकता होवे तो तत्त्व हाथ में कैसे आयेगा ?समझे बिना सुनते रहने से भी अपना हित नहीं होता है।

'नियमसार' में आता है कि जो सहज परम-पारिणामिक भाव से रहा हुआ है वह द्रव्य है। अनादि-अनन्त नित्य ध्रुववस्तु को परम पारिणामिक भाव कहा है और उसकी निर्मल अवस्था वह पर्याय है, वह जीव का धर्म है। उसका तो पता नहीं हो और गर्म पानी पीना, उपवास करना, चोबिहार करना, कंदमूल न खाना इत्यादि को धर्म मान लेता है। बापू! तुझको धर्म के स्वरूप का पता ही नहीं है।

पारिणामिकभाव में स्थित अर्थात् द्रव्य में रहे हुए ज्ञानादि गुण वह वस्तु

का स्वभाव है। ज्ञान, दर्शन, सुख, वीर्य ये चार अनन्त चतुष्टय उस द्रव्य में रहे हुए स्वभाव अनन्त चतुष्टय गुण है। उन्हें एकरूप गिनो तो शुद्धज्ञान चेतना परिणाम वह जीव का गुण है। यह सब समझने के लिए 'आत्मधर्म' मँगाना चाहिये। एक भाई से पूछा था कि 'आत्मधर्म' मँगाते हो ?तो उसने कहा कि नहीं, यह सब तो मुझको आता है। अरे भाई ! विकल्प क्या, जड़ क्या, जीव क्या है। यह जाननहार (तत्व) कैसा है -यह सब समझने के लिए 'आत्मधर्म' है, उसका तुझको पता नहीं है।

त्रिकाल वस्तु वह सहज पारिणामिकभाव है और उसमें रहनेवाले गुण उसकी त्रिकाली शक्तियाँ हैं। द्रव्य-गुण ध्रुव है। द्रव्य के बिना गुण नहीं होते और गुण के बिना द्रव्य नहीं होता है। त्रिकाली द्रव्यस्वभाव को मुख्य करना और पर्याय को गौण करना वह द्रव्यार्थिकनय है। त्रिकाली ज्ञायकभाव वह द्रव्य है, वह कारण परमात्मा है, वह कारण नियम है और उस कारण द्रव्य का आश्रय लेकर होने वाली निर्मल सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की अवस्था कार्य पर्याय है वह नियमसार है। वह पर्याय द्रव्य के बिना नहीं होती और द्रव्य गुण और पर्याय के बिना नहीं होता।

इतनी स्पष्ट बात होने पर भी (जीव) कहता है कि मुझे सूक्ष्म बात समझ में नहीं आती। अरे ! संसार में तो डेड अक्ल होकर चक्रवर्ती ब्याज निकालते हो। यह तो संसार परिभ्रमण का भाव है। भगवान आत्मा का स्वभाव तो चारगति का अभाव करने का है। धर्म में प्रधान ऐसे सर्वज्ञदेव चारगति का अभाव करनेवाले चक्रवर्ती हैं। आत्मवस्तु तो त्रिकाल चार गति के अभाव करने के स्वभाववाली ही है; परन्तु उसकी अवस्था में धर्म अथवा अधर्मरूप भाव होते हैं। अवस्था और गुण के बिना वस्तु नहीं होती और वस्तु के बिना गुण-पर्याय नहीं होते।

गुणी के बिना गुण नहीं होते और गुण के बिना गुणी नहीं होता और वह अपनी वर्तमान दशा से सहित ही होता है। पर्याय के बिना द्रव्य नहीं होता और द्रव्य के बिना पर्याय नहीं होती। मुख्यरूप से द्रव्य का ज्ञान किया जावे, तब

पर्यायें गौण रखी जाती हैं। द्रव्य सामान्य है और पर्याय विशेष है। सामान्य में भेद नहीं होते, विशेष में भेद होते हैं। वस्तु सामान्य-विशेषस्वरूप है। यद्यपि पुद्गल भी वस्तु है; परन्तु यह 'जीवद्वार' है- इसकारण यहाँ पुद्गल की बात नहीं है, जीवद्रव्य का ही कथन है।

पुद्गल का छोटे से छोटा अणु, वह परमाणु है। वही पुद्गल द्रव्य है। उसमें स्पर्श, रस, गंध, वर्णादि गुण हैं और ठंडी, गर्म इत्यादि उसकी पर्यायें हैं। वे पर्यायें और गुण परमाणु द्रव्य के बिना नहीं होती हैं और परमाणु द्रव्य बिना गुण-पर्याय के नहीं होता है। जो त्रिकाल एकरूप सदृश..सदृश रहे, वह सामान्य है और उसकी अवस्थायें बदलती हैं विसदृश होती हैं, इसलिए उसको विशेष कहते हैं।

यह वस्तुस्वरूप समझाकर कहने का प्रयोजन ऐसा है कि पर के कारण तेरी पर्याय होती है- ऐसा नहीं है और तेरे कारण पर की पर्याय होती है- ऐसा भी नहीं है।

कोई मनुष्य कहता है कि मुझे धर्म करना है तो उसमें इतनी बात सिद्ध होती है कि-

(1) उसकी दशा में धर्म नहीं है।

(2) उसकी दशा में अधर्म है।

(3) अधर्म का अभाव करके धर्मदशा प्रकट करना है,

इसलिए वह पर्याय है; क्योंकि मिटना और होना पर्याय का स्वरूप है। गुण में मिटना अथवा होनापना नहीं होता है। गुण तो कायम रहते हैं। उनमें उत्पाद-विनाश नहीं होता है।

जीव 'सामान्य' वह द्रव्य है और 'विशेष' वह उसकी दशा है। जीव का विशेष स्त्री-पुत्र-धनादिक नहीं है। इसलिए संयोग में स्त्री, पुत्र, धनादिक हों, वे तेरे कारण नहीं हैं, वे उनके अपने कारण से हैं। तू उनसे भिन्न वस्तु है और तेरा विशेष तेरे में होता है, पर में तेरा विशेष नहीं होता है।

यह भाषा तो बहुत सादी है। भाव भले ही कठिन है, पर भाषा सादी है।

श्रोता:- भाव तो बहुत कठिन है।

पूज्य गुरुदेवश्री:- इसने कभी समझपूर्वक सुना नहीं है, ऊपर-ऊपर से सुनता है। इसलिए भाव कठिन लगते हैं। इसको ऐसा लगता है कि अपना कुछ दया, दान, त्यागादि विशेष कार्य करें तो धर्म हो; परन्तु भाई! यह तेरा विशेष कार्य नहीं है। तेरी दशा में विशेषता लाना -यह तेरा विशेष कार्य है।

द्रव्य और पर्याय में अन्तर यह है कि द्रव्य त्रिकाल एकरूप रहता है और पर्याय हमेशा पलटती रहती है। इसलिए द्रव्य सामान्य है और पर्याय विशेष है। द्रव्य सदृश रहता है इसलिए कोई पर्याय सदृश रहे ऐसा नहीं है और पर्याय बदलती है, इसलिए द्रव्य भी बदलता है ऐसा नहीं है। द्रव्य का विशेष, यह उसकी दशा है और दशा का सामान्य यह उसका द्रव्य है। अन्य कोई द्रव्य उसका सामान्य नहीं है। पण्डित बुद्धिलालजी ने अच्छा स्पष्टीकरण किया है। द्रव्य और पर्याय में अन्तर है। जीवद्रव्य सामान्य है और उसकी विशेष अवस्था में फेर है। दोनों का स्वरूप एक नहीं है। दोनों मे सामान्य-विशेष का अन्तर पड़ता है।

अब कहते हैं कि समझने के लिए नय से पहले सब समझना; परन्तु उसी के विकल्पों में रहने से आत्मा की प्राप्ति नहीं होती है। जीव का स्वरूप निश्चयनय से ध्रुवद्रव्य सामान्य है और व्यवहारनय से पर्यायरूप और भेदरूप है। नयों के शुद्ध निश्चयनय, अशुद्ध निश्चयनय, सद्भूत व्यवहारनय, असद्भूत व्यवहारनय इत्यादि बहुत भेदों से वस्तुस्वरूप का विचार होता है; परन्तु उनके विकल्प चित्त में तरंग पैदा करते हैं। विकल्पों में रुकने से आत्मा की प्राप्ति नहीं होती है।

द्रव्यार्थिकनय से वस्तु नित्य है, पर्यायार्थिकनय से अनित्य है, भेदरूप है। यह सब जैसा है, वैसा बराबर समझना; परन्तु इसके विकल्पों के राग में रुकने से तो आत्मा की प्राप्ति नहीं होती है। व्यवहाररत्नत्रय से तो आत्मा की प्राप्ति नहीं होती; परन्तु नय के ऐसे विकल्पों से भी आत्मा प्राप्त नहीं होता है।

शुद्ध निश्चयनय से देखो तो आत्मा त्रिकाल ज्ञायक एक भाव है और

अशुद्धनय से देखो तो विकार आत्मा में होता है। अपने में होता है, इसलिए निश्चय है; परन्तु विकार है, इसलिए उस नय को अशुद्ध निश्चयनय कहा है। गुण और गुणी का भेद डालना, वह सद्भूत व्यवहार है। जैसे कि 'आत्मा में ज्ञान-दर्शनादि गुण हैं।' गुणों का भेद डालकर वस्तु का कथन करना सद्भूत व्यवहार है और 'आत्मा में पुण्य-पाप रागादि हैं' -यह असद्भूत व्यवहार का कथन है। प्रथम भूमिका में इस जाति के विकल्प आते हैं; परन्तु ये विकल्प मन में अनेक तरंगें पैदा करते हैं, इसकारण मन को विश्राम नहीं मिलता है। इसीलिए कहा है कि नय के कल्लौल अनुभव में बाधक हैं। विकल्प के आश्रय से आत्मा का अनुभव नहीं होता है।

जहाँतक, वस्तु पूर्ण है...पर्याय में अशुद्धि है..इत्यादि विकल्प रहते हैं, वहाँतक वस्तु की प्राप्ति नहीं होती है। विकल्पों में डाँवाडोल चलता है। वहाँ तक चित्त को विश्राम नहीं मिलता है। प्रथम ऐसा जाने कि त्रिकाल नित्यानंद शुद्ध प्रभु शुद्ध निश्चय का विषय है और पर्याय अशुद्ध निश्चयनय का विषय है ऐसा प्रथम जाने; परन्तु ऐसे भेद जानने में ही रुक जाए तो सम्यग्दर्शन नहीं होता है। वस्तु स्वयं पूर्णानन्द की मूर्ति है, उस तरफ झुकाव होने पर विकल्पों का आश्रय नहीं रहता और स्वभाव के आश्रय से सम्यग्दर्शन हो जाता है।

देखो, ज्ञान के अंशों के भेद में रुकने से भी सम्यग्दर्शन नहीं होता, तो बाहर के दया, दान, व्रत, भक्ति से धर्म हो यह कैसे संभव है? यह तो अत्यन्त विपरीत बात है। भाई! वीतराग का मार्ग कोई अलग ही है। इस मार्ग को तूने सुना नहीं और खोटे मार्ग को सच्चा मार्ग मानकर चला है। भाई! तुझे पता नहीं है, तू भ्रम में खड़ा है।

'अनुभव चिंतामणि रतन, अनुभव है रसकूप ।
अनुभव मारग मोक्ष को, अनुभव मोक्ष स्वरूप ।।'

शुद्ध चैतन्यमूर्ति भगवान का अन्तर्मुख होकर अनुभव करना है, वहाँ नय के विकल्पों में रुकना बाधक है। नयों के विकल्प अनुभव में विघ्नकारक है।

क्रमशः

गतांक से आगे

श्रुत परम्परा एवं श्रुतज्ञान का स्वरूप

3. वन्दना नामक अर्थाधिकार जिनेन्द्र देव संबंधी और उन जिनेन्द्र देव के अवलम्बन से जिनालय सम्बन्धी वन्दना के निरवद्य भाव का अर्थात् प्रशस्त भाव का वर्णन करता है।

4. प्रतिक्रमण नामक अर्थाधिकार दु:षमा आदि काल और छह संहनन से युक्त स्थिर तथा अस्थिर स्वभाववाले पुरुषों का आश्रय लेकर इन सात प्रकार के प्रतिक्रमणों का वर्णन करता है।

5. वैनयिक नामक अर्थाधिकार ज्ञानविनय, दर्शनविनय, चारित्र विनय, तपविनय और उपचारविनय आदि का विशद वर्णन करता है।

6. कृतिकर्म नामक अर्थाधिकार अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु की पूजाविधि का वर्णन करता है।

7. विशिष्ट काल को विकाल कहते हैं तथा उसमें जो विशेषता होती है, उसे वैकालिक कहते हैं। वैकालिक दश हैं। **दश वैकालिक नामक अर्थाधिकार** दश वैकालिकों का वर्णन तथा मुनियों की आचारविधि और गोचरविधि का वर्णन करता है।

8. उत्तराध्ययन नामक अर्थाधिकार में चार प्रकार के उपसर्ग और बाईस परीषहों के सहन करने का विधान एवं यह उनके सहन करनेवालों के जीवनवृत्त का वर्णन है।

9. कल्पव्यवहार साधुओं के योग्य और अयोग्य आचरण होने पर प्रायश्चित्त विधि का वर्णन करता है। कल्प नाम योग्य का है और व्यवहार नाम आचरण का है।

10. कल्प्याकल्प्य द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की अपेक्षा मुनियों के लिए 'यह योग्य है और यह अयोग्य है' – इस तरह इन सबका वर्णन करता है।

11. महाकल्प्य काल और संहनन का आश्रय कर साधुओं के योग्य द्रव्य व क्षेत्र आदि का वर्णन करता है।

12. पुण्डरीक भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिष्क, कल्पवासी – इन चार

प्रकार के देवों में उत्पत्ति के कारणभूत दान, पूजा, तपश्चरण, अकाम निर्जरा, सम्यग्दर्शन और संयम आदि अनुष्ठानों का वर्णन करता है।

13. महापुण्डरीक समस्त इन्द्र और प्रतीन्द्रों में उत्पत्ति के कारणरूप तप विशेष आदि आचरण का वर्णन करता है।

14. प्रमादजन्य दोषों के निराकरण करने को निषिद्धि कहते हैं और इस निषिद्धि अर्थात् बहुत प्रकार के प्रायश्चित के प्रतिपादन करनेवाले शास्त्र को निषिद्धि का कहते हैं।

इस प्रकार 'अंगप्रविष्ट' और अंगबाह्य के अन्तर्गत आधुनिक सभी विषयों का समावेश तो होता ही है, साथ ही आध्यात्मिक भावना, कर्मबन्ध की विधि और फल, कर्मों के संक्रमण आदि के कारण, विभिन्न दार्शनिक चर्चाएँ, मत-मतान्तर, ज्योतिष, आयुर्वेद, गणित, भौतिकशास्त्र, आचारशास्त्र, सृष्टि-उत्पत्ति विद्या, भूगोल एवं पौराणिक मान्यताओं का परिज्ञान भी उक्त श्रुत या आगम से प्राप्त होता है। आगम का यह विषय-विस्तार इतना सघन और विस्तृत है कि इसकी पूर्ण जानकारी से व्यक्ति श्रुतकेवली पद प्राप्त करता है।

इस प्रकार अशब्दलिंगज तथा शब्दलिंगज श्रुतज्ञान के भेदों का वर्णन पूरा हुआ। *क्रमशः* साभार : स्वाध्याय का स्वरूप

वैराग्य समाचार

बानपुर : श्री राजकुमार चौधरी का देहपरिवर्तन शान्तपरिणामोंपूर्वक हो गया है। आप गुरुदेवश्री के अनन्य भक्त थे। आप धार्मिक व उत्साही कार्यकर्ता थे, आपका सम्पूर्ण परिवार तीर्थधाम मंगलायतन से जुड़ा हुआ है। आप पण्डित विकास शास्त्री के पिताजी थे।

हरिद्वार : श्रीमती कान्ताजी जैन का देहपरिवर्तन शान्तपरिणामोंपूर्वक हो गया है। आप धार्मिक महिला थीं। आपका सम्पूर्ण परिवार तीर्थधाम मंगलायतन से जुड़ा हुआ है। आप श्री स्वप्निल जैन की बुआजी थीं।

खडैरी : पण्डित रामनरेश शास्त्री व नितिन शास्त्री की माताजी का देहपरिवर्तन शान्तपरिणामोंपूर्वक हो गया है। आप अत्यन्त भद्र महिला थीं।

दिवंगत आत्मा शीघ्र ही मोक्षमार्ग प्रशस्त कर अभ्युदय को प्राप्त हो—ऐसी भावना मङ्गलायतन परिवार व्यक्त करता है।

मुख्य तिथि-पर्व

जून माह

3 जून – ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्थी
भगवान धर्मनाथ निर्वाण कल्याणक
4 जून – ज्येष्ठ शुक्ल पंचम
श्रुतपंचमी
7 जून – ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी
अष्टमी
11 जून – ज्येष्ठ शुक्ल बारस
भगवान सुपार्श्वनाथ जन्म-तप कल्याणक
13 जून – ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्दशी
चतुर्दशी
14 जून – ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा
पूर्णिमा
16जून – आषाढ़ कृष्ण द्वितीय-तृतीय
भगवान ऋषभनाथ गर्भ कल्याणक
19 जून – आषाढ़ कृष्ण सप्तमी
भगवान वासुपूज्य गर्भ कल्याणक
21 जून – आषाढ़ कृष्ण **अष्टमी**
भगवान विमलनाथ निर्वाण कल्याणक
23 जून – आषाढ़ कृष्ण दसवीं
भगवान नमिनाथ जन्म-तप कल्याणक
27 जून – आषाढ़ कृष्ण चतुर्दशी
चतुर्दशी, रोहिणी व्रत
28जून – आषाढ़ कृष्ण अमावस्या

जुलाई 2022

5 जुलाई – आषाढ़ शुक्ल षष्ठी
भगवान महावीर गर्भ कल्याणक
6 जुलाई – आषाढ़ शुक्ल सप्तमी
भगवान नेमिनाथ निर्वाण कल्याणक
7 जुलाई – आषाढ़ शुक्ल अष्टमी
अष्टमी, अष्टाह्निका व्रत प्रारम्भ
12 जुलाई – आषाढ़ शुक्ल 13-14
चतुर्दशी
13 जुलाई – आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा
गुरु पूर्णिमा, अष्टाह्निका व्रत समाप्त
14 जुलाई – श्रावण कृष्ण एकम्
वीरशासन जयन्ती, नव वर्ष प्रारम्भ
15 जुलाई – श्रावण कृष्ण द्वितीय
भगवान मुनिसुव्रत गर्भ कल्याणक
18 जुलाई – श्रावण कृष्ण पंचमी-षष्ठी
भगवान नेमिनाथ जन्म-तप कल्याणक
20 जुलाई – श्रावण कृष्ण अष्टमी
अष्टमी
23 जुलाई – श्रावण कृष्ण दसमीं
भगवान कुन्थुनाथ गर्भ कल्याणक
24 जुलाई – श्रावण कृष्ण एकादश
रोहिणी व्रत
27 जुलाई – श्रावण कृष्ण चतुर्दशी
चतुर्दशी
28 जुलाई – श्रावण कृष्ण अमावस्या
अमावस्या
30 जुलाई – श्रावण शुक्ल द्वितीय
भगवान सुमतिनाथ गर्भ कल्याणक

प्रेरक-प्रसंग

सिंहासन धंस जाते हैं जब सत्य की हत्या होती है

क्षीरकदंब अपने धर्म के असाधारण विद्वान थे। उसके पुत्र का नाम पर्वत था। क्षीरकदंब के पास उसका पुत्र पर्वत, राजा अभिचंद्र का पुत्र वसु तथा नारद विद्याध्ययन करता था। शिक्षा समाप्त कर वसु तो राजा बन गया। नारद कुछ दिन के लिए अपने गुरु के पास ही ठहर गया। कुछ समय पश्चात् क्षीरकदंब दीक्षा लेकर वन में चला गया। पर्वत ने गुरुकुल सँभाल लिया। एक दिन पर्वत और नारद में एक विवाद छिड़ गया। पर्वत कहता है 'यजैर्यष्टव्यम्' इस वेद–वाक्य में 'अज' शब्द का अर्थ बकरा है। नारद ने कहा– 'अज' शब्द का अर्थ तीन वर्ष पुरानी धान है। इस तरह दोनों में काफी समय तक विवाद चलता रहा। कोई एक–दूसरे की बात मानने को तैयार नहीं था और निर्णय देनेवाले गुरु वन में चले गये थे। अन्त में यह निर्णय किया गया कि अपने गुरु–भाई राजा वसु जो निर्णय देंगे, वह दोनों को मान्य होगा।

पर्वत ने अपनी माता से विवाद में जीतने के लिए खोटा आग्रह किया कि यदि आप अपने शिष्य वसु राजा को समझा देंगी तो वह हमारी बात की पुष्टि कर देगा। पर्वत की माता ने वसु राजा के पास जाकर सारी परिस्थिति समझा दी और कहा कि आप पर्वत की बात की पुष्टि करना। वसु राजा अपने गुरु–पत्नी की बात टाल नहीं सका। पश्चात् पर्वत और नारद वसु राजा की राजसभा में अपने विवाद का निर्णय लेने के लिए पहुँचे। दोनों ने अपना –अपना पक्ष रखते हुए शास्त्र–पुराणों की दुहाई दी।

वसु राजा यद्यपि 'सत्य पक्ष' को जानता था, किन्तु जान बूझकर गुरु–पत्नी के प्रभाव में आकर न्याय और सत्य के सिंहासन पर बैठकर भी सत्य की उसे हत्या करनी थी; इसीलिए निर्णय तो उसने अपने मस्तिष्क में पूर्व में ही भर रखा था, किन्तु न्याय करने का नाटक उसे करना ही था; क्योंकि उसने सत्यवाद बनने का नाटक पहले ही रचा रखा था। उसने अपने सिंहासन के पाये स्फटिकमणि के बनवाये थे, जिससे लोगें की यह धारणा बन गई थी कि सत्यवादी होने के कारण उसका सिंहासन अंतरिक्ष में निराधार ठहरा है। **धर्म और सत्य के कुछ ठेकेदार ऊँचे आसनों पर बैठकर ऐसा ही नाटक करते हैं।**

निर्णय सुनने के लिए सभा खचाखच भरी हुई थी। तभी वसु राजा ने अपना निर्णय सुनाते हुए कहा – वेद–पुराणों में 'अज' शब्द का अर्थ बकरा ही होता है। इतना उसका कहना था कि उसका सिंहासन जमीन में धँस गया और वह मरकर नरक चला गया। चूँकि उसने असत्य का पक्ष तो लिया ही था, किन्तु अधर्म और असत्य का मार्ग खोलकर भयंकर पाप किया था। उसका फल तत्काल मिल गया। इसी प्रकार जो भी पक्षपात वश अपने कुपक्ष की पुष्टि करते हैं, वे भी वसु राजा के ही पुत्र हैं।

शिक्षा – असत्य बोलने का ही नहीं, अपितु असत्य का पक्ष लेना भी महापाप है; अतः सदैव सत्य का ही पोषण करना चाहिए।

"जिस प्रकार–उसी प्रकार" में छिपा रहस्य

जिस प्रकार– सड़क पर चलते समय जरा सी दृष्टि हटी तो दुर्घटना हो जाती है।

उसी प्रकार– साधक की दृष्टि स्वभाव, पर से हटते ही आकुलतायें सताने लगती है।

जिस प्रकार– प्रकाश होने पर अंधकार स्वयं गायब हो जाता है।

उसी प्रकार– स्व आश्रय लेने से पर लक्ष्य स्वयं छूट जाते है।

जिस प्रकार– पिता बच्चे को कहता है बेटा माँ को बुलाओ अर्थात् पिता बच्चे की भाषा बोलते है।

उसी प्रकार– आचार्य तथा जिनवाणी हमें हमारी भाषा में ही तत्त्व को समझाते है कि तू जीव द्रव्य है, वो यह जानते है कि यह तो शरीर से रहित जीव द्रव्य है।

जिस प्रकार– तांगे वाला बच्चे को कहता है, बीच में खड़े होकर इधर–उधर मत देख, मर जायेगा।

उसी प्रकार– गुरु कहते है इधर–उधर देखना बंद कर अपनी तरफ देख वरना कष्टों में पड़ जायेगा।

जिस प्रकार– रोगी यह नहीं सोचता कि मै ठीक हो जाऊँगा तो यह अस्पताल कैसे चलेगा। बालक यह नही सोचता कि मैं पास होकर चला जाऊँगा तो स्कूल का क्या होगा। सज्जन यह नहीं सोचता कि मैं अपराध नहीं करूंगा तो कारागृह का क्या होगा।

उसी प्रकार– ज्ञानी नहीं सोचता हम मोक्ष चले जायेंगे तो संसार का क्या होगा।

जिस प्रकार– माता पुत्र का सूक्ष्म उपयोग द्वारा पालन करती है।

उसी प्रकार– धर्मी को साधार्मियों के प्रति सूक्ष्म वात्सल्य भाव होना चाहिए। गुरुओं का वात्सल्य है शिष्यों के दोषों को निकालना।

जिस प्रकार– समुद्र में फेंका गया कीमती रत्न मिलना असंभव सा है।

उसी प्रकार– विषयों में लिप्त मनुष्य जन्म को गवाकर पुनः पाना असंभव सा ही है, पछताने एवं दुखी होने के अलावा कुछ नहीं बचेगा।

क्रमशः संकलन – प्रो० पुरुषोत्तमकुमार जैन, रुड़की

समाचार-दर्शन

देवलाली शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

देवलाली : पण्डित टोडरमल स्मारक द्वारा संचालित 54वाँ शिक्षण-प्रशिक्षण पूज्य कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली में आयोजित शिक्षण शिविर पूजन, जिनेन्द्रभक्ति, प्रवचन, अभ्यास कक्षा, प्रशिक्षण कक्षा, संकल्प दिवस आदि अनेक मांगलिक आयोजनों सहित सम्पन्न हुआ।

इस शिविर में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय जयपुर, आचार्य अकलंक दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय बांसवाडा, आचार्य धरसेन दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय कोटा, भगवान श्री आदिनाथ विद्यानिकेतन, तीर्थधाम मंगलायतन, अलीगढ़ आदि के 334 विद्यार्थियों सहित हजारों की संख्या में साधर्मियों ने जैनदर्शन के सैद्धान्तिक विषयों का गहराई से अध्ययन व लाभ लिया।

दिनांक 15 मई 2022 को प्रात: आयोजित उद्घाटन समारोह का ध्वजारोहण श्री मृत्युंजय रामराव दोडल परिवार मुम्बई एवं शिविर का उद्घाटन श्री दिलीपभाई वेलजी शाह परिवार, मुम्बई के करकमलों से हुआ। शिविर आमन्त्रणकर्ता श्रीमती कुसुम-महेन्द्रकुमार गंगवाल श्री राहुल-विनीत गंगवाल जयपुर तथा स्व. श्रीमती कंचनदेवी-धर्मचन्द दीवान एवं श्री विद्याप्रकाश-संजयकुमार-अजयकुमार दीवान, सीकर-सूरत थे।

इस ज्ञानयज्ञ में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल जयपुर के मंगल सान्निध्य में पण्डित अभयकुमार शास्त्री देवलाली, बालब्रह्मचारी हेमचंद 'हेम' देवलाली, बालब्रह्मचारी अभिनन्दनकुमार जैन देवलाली, डॉ. शान्तिकुमार पाटील जयपुर, डॉ. संजीवकुमार गोधा जयपुर, पण्डित कमलचन्द पिड़ावा, पण्डित पीयूष शास्त्री जयपुर, पण्डित धर्मेन्द्र शास्त्री कोटा, पण्डित प्रवीण शास्त्री बाँसवाड़ा, डॉ. सचिन्द्र जैन तीर्थधाम मंगलायतन सहित अनेक पदाधिकारी एवं प्रशिक्षक अध्यापक शिविर में उपस्थित थे।

सभा का संचालन श्री अध्यात्मप्रकाश भारिल्ल जयपुर ने तथा मंगलाचरण पण्डित जिनकुमार शास्त्री जयपुर ने किया। इस प्रसंग पर देवलाली ट्रस्ट का परिचय एवं स्वागत भाषण श्री उल्लासभाई जोबालिया मुम्बई ने दिया।

22 मई को श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर विद्वत् शिरोमणी डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल का अभिनन्दन समारोह, ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री बसन्तभाई दोशी की अध्यक्षता एवं टोडरमल स्मारक

ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमार गोदीका के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ।

समारोह के हस्ताक्षर - श्री अजितप्रसाद जैन दिल्ली, अध्यक्ष, श्री आदिनाथ कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट अलीगढ़, श्री विपुलभाई मोटानी, श्री उल्लासभाई जोबालिया, डॉ. किरणभाई शाह, श्री नवीनभाई महेता, श्री परमात्मप्रकाश भारिल्ल, श्री विपिन शास्त्री मुम्बई, श्री अध्यात्मप्रकाश भारिल्ल, डॉ. एस.पी. भारिल्ल, डॉ. शान्तिकुमार पाटील, श्री राजेन्द्रकुमार बंसल, श्री महेन्द्रकुमार गंगवाल, श्री संजय दीवान, श्री नितिनभाई शाह, श्री कमलेशभाई टिम्बड़िया, श्री नरेश सिंघई, श्री जयकुमार जैन, श्री मणिभाई कारिया, श्री बी.डी. जैनसाहब, पण्डित अनिल भिण्ड, पण्डित राजकुमार जैन उदयपुर, श्री प्रेमचन्द बजाज कोटा, डॉ. महावीर टोकर, डॉ. मनीष जैन मेरठ, डॉ. जिनेन्द्र शास्त्री उदयपुर, पण्डित विपिन शास्त्री नागपुर, श्रीमती गुणमालाजी भारिल्ल एवं डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया आदि महानुभाव उपस्थित थे।

23 मई को रात्रि में नासिक के 'विशाल कालीदास कला मन्दिर' रंगमंच पर 'भरत के अन्तर्द्वन्द्व' नाटक का भव्य मंचन किया गया।

24 मई प्रात: तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल पुरस्कार की अध्यक्षता एवं डॉ. शान्तिकुमार पाटील, डॉ. संजीवकुमार गोधा के मुख्य आतिथ्य में पण्डित ऋषभ शास्त्री दिल्ली, पण्डित चर्चित शास्त्री खनियांधाना, मंगलार्थी पण्डित संयम शास्त्री नागपुर एवं पण्डित जिनेश शास्त्री मुम्बई को तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल पुरस्कार से 11,000/- की राशि सहित पुरस्कृत किया गया।

इसका आयोजन संजय जैन शास्त्री जयपुर एवं संचालन पण्डित धर्मेन्द्र शास्त्री कोटा ने किया। इस अवसर पर श्री संजय दीवान सूरत ने पाँच लाख रुपये ध्रुवफण्ड हेतु सर्वोदय अहिंसा ट्रस्ट को दान किये।

24 मई को डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल की अध्यक्षता में पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद ने आध्यात्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करनेवाले स्नातकों को सम्मानित किया। जिसमें जैनदर्शन के प्रचार-प्रसार हेतु 11 स्नातक विद्वानों का सम्मान किया गया।

विद्यावाचस्पति पीएच.डी. की उपाधि करने हेतु : पण्डित सचिन्द्र शास्त्री तीर्थधाम मंगलायतन एवं पण्डित विवेक शास्त्री इन्दौर। शासकीय सेवा में चयन हेतु सात स्नातकों का सम्मान शाल, श्रीफल, प्रशस्ति प्रदान कर किया।

25 मई को संकल्प दिवस के अवसर पर जिनेन्द्र शास्त्री उदयपुर के नेतृत्व में

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल का सम्मान देश की अनेकानेक संस्थाओं के प्रतिनिधियों द्वारा किया गया। ज्ञात हो कि तीर्थधाम मंगलायतन द्वारा ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री अजितप्रसाद जैन व भगवान श्री आदिनाथ विद्यानिकेतन के प्राचार्य डॉ. सचिन्द्र शास्त्री द्वारा भी डॉ. भारिल्लजी का सम्मान शाल व आदरणीय पवनजी की अन्तिम प्रेरणा कृति 'अहो भाव' भेंटकर सम्मान किया गया। इस अवसर पर उपस्थित सभी स्नातकों ने आजीवन तत्त्वप्रचार का संकल्प लिया।

सम्पूर्ण दैनिक कार्यक्रम इस प्रकार रहा – प्रात:कालीन प्रौढ़ कक्षा पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा, प्रतिदिन प्रात: समयसार विधान, तत्पश्चात् पूज्य गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन, तत्पश्चात् डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल के 'भरत के अन्तर्द्वन्द्व' विषय पर व्याख्यान सम्पन्न हुए। मुख्य प्रवचन के पश्चात् प्रौढ़ कक्षा – पण्डित अभयकुमार शास्त्री देवलाली और पण्डित पीयूष जैन शास्त्री द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक एवं सायंकालीन कक्षा पण्डित प्रवीण शास्त्री बांसवाड़ा द्वारा गुणस्थान विषय पर सम्पन्न हुई।

प्रशिक्षण की मुख्य कक्षायें बालबोध की सिद्धान्तकथा शिक्षण पद्धति की कक्षा श्री अध्यात्मप्रकाश भारिल्ल व पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा ने ली। प्रवेशिका की सिद्धान्त तथा शिक्षण पद्धति की कक्षा डॉ. शान्तिकुमार पाटील जयपुर, पण्डित धर्मेन्द्र शास्त्री कोटा व पण्डित निखलेश शास्त्री दलपतपुर ने ली।

अन्तिम दिन 30 मई को सभी विद्यार्थियों ने धार्मिक परीक्षा दी। जिसमें बारह मंगलार्थी छात्रों ने भी विशेष योग्यता सहित प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण की। अन्तिम दिन 01 जून दीक्षान्त समारोह में सभी को डॉ. भारिल्ल की अध्यक्षता में अध्यक्षीय भाषण, प्रमाणपत्र व पुरस्कार प्रदान किया गया। इस सम्पूर्ण शिविर में मंगलायतन को श्री अजय जैन गौरझामर, श्री सुनील सर्राफ सागर, डॉ. बाहुबली जैन इन्दौर आदि ने आर्थिक सहयोग प्रदान किया। अत: ट्रस्ट इनका आभारी है।

श्रुतपंचमी पर्व सानन्द सम्पन्न

तीर्थधाम मंगलायतन : श्रुतपंचमी के पावन अवसर पर सुबह पूजन विधान, पूज्य गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन, तत्पश्चात् पण्डित सचिन जैन का स्वाध्याय, दोपहर में बालब्रह्मचारी कल्पनाबेन द्वारा विशिष्ट वाचना, सायंकालीन जिनेन्द्रभक्ति व श्रुतभक्ति के पश्चात् कण्ठपाठ प्रतियोगिता का आयोजन ब्र० कल्पनाबेन की अध्यक्षता में, जिसका संचालन आयुषी जैन दिल्ली ने किया। जिसके निर्णायक पण्डित संजय शास्त्री सर्वोदय ट्रस्ट जयपुर, डॉ. प्रमोद शास्त्री जयपुर और पण्डित ऋषभ शास्त्री दिल्ली ने मनोयोग पूर्वक सम्मिलित हुए। एतदर्थ हम सभी के आभारी हैं। सम्पूर्ण कार्यक्रम में मंगलार्थी छात्र व मंगलायतन परिवार उपस्थित था।

16वाँ सामूहिक जैन बाल संस्कार शिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

भिण्ड : केकेपीएस उज्जैन एवं श्री कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट भिण्ड एवं अखिल भारतीय जैन युवा फेडरेशन शाखा देवनगर, भिण्ड के द्वारा पचपन स्थानों पर देश के विभिन्न स्थानों पर दिनांक 3 जून से 12 जून 2022 तक आयोजित किया गया। इस शिविर के निर्देशक पण्डित अनिल शास्त्री, सह निर्देशक पण्डित अशीष शास्त्री, प्रमुख संयोजक पुष्पेन्द्र जैन आदि थे। इस शिविर में 12वीं कक्षा के मंगलार्थी अक्षत जैन ने भी अपना सहयोग प्रदान किया।

शाश्वत् तीर्थ जन्मभूमि अयोध्या में

मंगलार्थी छात्रों द्वारा श्रुतस्कंध विधान सानन्द सम्पन्न

तीर्थधाम मंगलायतन : तीर्थधाम मंगलायतन द्वारा उत्तरप्रदेश जैन विद्या शोध संस्थान लखनऊ संस्कृति विभाग उत्तरप्रदेश के तत्त्वावधान में श्रुतपंचमी के पावन अवसर पर दो दिवसीय धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन अयोध्याजी में किया गया। जिसमें श्रुतपंचमी पर्व पर 'श्रुतस्कंध विधान' व 'अनेकान्तरथ प्रवर्तन' व 'अनेकान्त से जनकल्याण' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया। जिसमें वक्ता के रूप में डॉ. योगेशचन्द्र जैन अलीगंज, प्रो. सुधा जैन लखनऊ विश्वविद्यालय, डॉ. श्रीमती पत्रिका जैन लखनऊ, श्रीमती सुनैना जैन लखनऊ, मंगलार्थी सुलभ जैन मुम्बई, डॉ. सचिन्द्र शास्त्री मंगलायतन, पण्डित अनुभव शास्त्री खनियांधाना, डॉ. मयंक जैन मंगलायतन विश्वविद्यालय आदि ने अपना अनेकान्त विषय पर सारगर्भित वक्तव्य दिया। जिसकी अध्यक्षता श्री शैलेन्द्र जैन अलीगढ़ ने की व मंगलाचरण मंगलार्थी वरांग जैन व आश्रय जैन ने किया। संस्था का परिचय प्रो. अभयकुमार जैन ने और आभार प्रदर्शन डॉ. राकेश सिंह निदेशक ने दिया।

इसी के पूर्व दिनांक 4 जून, ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी, श्रुत पंचमी के पावन अवसर पर 'हिन्दी साहित्य के उन्नायक साहित्यकार पण्डित टोडरमल' इस कृति का विमोचन विश्व हिन्दू परिषद के उपाध्यक्ष व श्री राम जन्मभूमि ट्रस्ट के सचिव श्री चम्पतरायजी अध्यक्षता में व भदन्तमित्र के मंगल सानिध्य में अयोध्या में विमोचन किया गया। जिसका मार्गदर्शन व निर्देशन डॉ. शान्तिकुमार पाटील व डॉ. संजीवजी गोधा ने किया। सम्पादन कार्य डॉ. सचिन्द्र शास्त्री मंगलायतन व पण्डित विक्रान्त पाटनी झालरापाटन ने किया। इसके प्रकाशन का गुरुतर भार उत्तरप्रदेश जैन विद्या शोध संस्थान लखनऊ संस्कृति विभाग उत्तरप्रदेश व सर्वोदय अहिंसा ट्रस्ट जयपुर ने संयुक्तरूप से वहन किया। इसी अवसर पर कार्यक्रम में पधारे सभी मंगलार्थी छात्रों का सम्मान पदक पहनाकर चम्पतरायजी ने किया व सभी ने मंगलार्थी छात्रों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की व उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की।

षट्खण्डागम ग्रन्थ की वाचना अनवरत प्रवाहित

तीर्थधाम मङ्गलायतन में प्रथम बार कीर्तिमान रचते हुए प्रथम श्रुतस्कन्ध '**षट्खण्डागम धवला टीका सहित**' वाचना का कार्यक्रम, मार्गशीर्ष पंचमी, शनिवार 5 दिसम्बर 2020 से करणानुयोग की विशेषज्ञ बालब्रह्मचारी कल्पनाबेन द्वारा अनवरत प्रारम्भ है। जिसकी प्रथम पुस्तक की वाचना का समापन 31 मार्च 2021 को; द्वितीय पुस्तक की वाचना का प्रारम्भ 01 अप्रेल से, समापन 08 जुलाई 2021 को; तृतीय पुस्तक की वाचना का प्रारम्भ 09 जुलाई 2021 तथा समापन 24 अक्टूबर 2021 को और चतुर्थ पुस्तक की वाचना का प्रारम्भ 25 अक्टूबर 2021 से 27 फरवरी 2022 को और पंचम पुस्तक की वांचना का 28 फरवरी 2022 से 24 अप्रेल 2022 तक भक्तिभावपूर्वक सम्पन्न हुई।

विद्वान बालब्रह्मचारिणी कल्पनाबेन, जयपुर तथा सहयोगी भाई-बहिनों एवं मंगलायतन परिवार का भी लाभ प्राप्त हुआ।

सम्पूर्ण 16 पुस्तकों की वाचना निरन्तर तीर्थधाम मंगलायतन से प्रवाहित होती रहे, ऐसी भावना आदरणीय पवनजी जैन की थी। जिसमें क्रमशः...

छठवीं पुस्तक की वाचना 25 अप्रेल 2022 से प्रारम्भ

विद्वत् समागम - बालब्रह्मचारिणी कल्पनाबेन, जयपुर एवं सहयोगी भाई-बहिनों तथा मंगलायतन परिवार का भी लाभ प्राप्त होता है।

दोपहर 01.30 से 03.15 तक (प्रतिदिन)		**षट्खण्डागम (धवलाजी)**
रात्रि	07.30 से 08.30 बजे तक	मूलाचार ग्रन्थ का स्वाध्याय
	08.30 से 09.15 बजे तक	**समयसार ग्रन्थाधिराज के कलशों का व्याकरण के नियमानुसार शुद्ध उच्च्चारण सहित सामान्यार्थ**

नोट—इस कार्यक्रम में आप ZOOM ID-9121984198,
Password - mang4321 के माध्यम से भी शामिल हो सकते हैं।

सत्पात्रोपगतं दानं सुक्षेत्रे गतबीजवत्।
फलाय यदपि स्वल्पं तद्कल्पाय कल्पते॥

अर्थात् सत्पात्र में गया हुआ दान अच्छे स्थान में बोये हुए बीज के समान सफल होता है।

संयम प्रकाश, उत्तरार्ध तृतीय किरण, पृष्ठ 521

मङ्गल वात्सल्य-निधि

सदस्यता फार्म

नाम ....

पता ....

.... पिन कोड ....

मोबाइल .... ई-मेल ....

मैं **'मङ्गल वात्सल्य-निधि'** योजना की सदस्यता स्वीकार करता हूँ और मैं .... राशि जमा करवाऊँगा / दूँगा।

हस्ताक्षर

- चौथाई ग्रास दान भी अनुकरणीय -

ग्रासस्तदर्धमपि देयमथार्धमेव,
तस्यापि सन्ततमणुव्रतिना यथर्द्धिः।
इच्छानुसाररूपमिह कस्य कदात्र लोके,
द्रव्यं भविष्यति सदुत्तमदानहेतुः॥

अर्थात् गृहस्थियों को अपने धन के अनुसार एक ग्रास अथवा आधा ग्रास अथवा चौथाई ग्रास अवश्य ही दान देना चाहिए। तात्पर्य यह है कि हमें ऐसा नहीं समझना चाहिए कि जब मैं लखपति या करोड़पति हो जाऊँगा, तब दान दूँगा; बल्कि जितना धन हमारे पास है, उसी के अनुसार थोड़ा-बहुत दान अवश्य देना चाहिए। - आचार्य पद्मनन्दि : पद्मनन्दि पञ्चविंशतिका, श्लोक 230

यह राशि आप निम्न प्रकार से हमें भेज सकते हैं -

1. बैंक द्वारा

NAME	:	SHRI ADINATH KUNDKUND KAHAN DIGAMBER JAIN TRUST, ALIGARH
BANK NAME	:	PUNJAB NATIONAL BANK
BRANCH	:	RAILWAY ROAD, ALIGARH
A/C. NO.	:	1825000100065332
RTGS/NEFTS IFS CODE	:	PUNB0001000
PAN NO.	:	AABTA0995P

BHIM UPI Payments Accepted at
SHRI ADINATH KUND KUND KAHAN DIGAMBER JAIN TRUST

2. Online : http://www.mangalayatan.com/online-donation/
3. ECS : Auto Debit Form के माध्यम से।

तीर्थधाम मंगलायतन से प्रकाशित एवं उपलब्ध साहित्य सूची

मूल ग्रन्थ–

1. समयसार वचनिका
2. प्रवचनसार (हिन्दी, अंग्रेजी)
3. नियमसार
4. इष्टोपदेश
5. समाधितंत्र
6. छहढाला (हिन्दी, अंग्रेजी सचित्र)
7. मोक्षमार्ग प्रकाशक
8. समयसार कलश
9. अध्यात्म पंच संग्रह
10. परम अध्यात्म तरंगिणी
11. तत्त्वज्ञान तरंगिणी
12. हरिवंशपुराण वचनिका
13. सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका

पूज्य गुरुदेवश्री के प्रवचन

1. प्रवचनरत्न चिन्तामणि
2. मोक्षमार्गप्रकाशक प्रवचन
3. प्रवचन नवनीत
4. वृहद्द्रव्य संग्रह प्रवचन
5. आत्मसिद्धि पर प्रवचन
6. प्रवचनसुधा
7. समयसार नाटक पर प्रवचन
8. अष्टपाहुड़ प्रवचन
9. विषापहार प्रवचन
10. भक्तामर रहस्य
11. आतम के हित पंथ लाग!
12. स्वतंत्रता की घोषणा
13. पंचकल्याणक प्रवचन
14 मंगल महोत्सव प्रवचन
15. कार्तिकेयानुप्रेक्षा प्रवचन
16. छहढ़ाला प्रवचन
17. पंचकल्याणक क्या, क्यों, कैसे?
18. देखो जी आदीश्वरस्वामी
19. भेदविज्ञानसार
20. दीपावली प्रवचन
21. समयसार सिद्धि
22. आध्यात्मिक सोपान
23. अमृत प्रवचन
24. स्वानुभूति दर्शन
25. साध्य सिद्धि का अचलित मार्ग
26. अहो भाव!

पण्डित कैलाशचन्द्रजी का साहित्य

1. जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला (भाग 1 से 7) (हिन्दी गुजराती)
2. मंगल समर्पण

अन्य

1. फोटो फ्रेम (पूज्य गुरुदेवश्री, बहिनश्री)

2. सी.डी.

3. मंगल भक्ति सुमन
4. मंगल उपासना
5. करणानुयोग प्रवेशिका
6. धन्य मुनिदशा
7. धन्य मुनिराज हमारे हैं!
8. प्रवचनसार अनुशीलन

बाल साहित्य (कॉमिक्स)

1. कामदेव प्रद्युम्न
2. बलिदान

आद. पवनजी की स्मृति में उपरोक्त साहित्य सभी मन्दिरों, ट्रस्ट, संस्थानों, विद्यालयों, पुस्तकालयों और साधर्मी भाई–बहिनों को स्वाध्यायार्थ निःशुल्क दिया जायेगा। सम्पर्क – सम्पर्कसूत्र – पण्डित सुधीर शास्त्री, 9756633800

Email : info@mangalayatan.com

– डाकखर्च आपका रहेगा।

चिदायतन सहयोग

- परम शिरोमणी संरक्षक	रुपये 11.00 लाख
- शिरोमणी संरक्षक	रुपये 05.00 लाख
- परम संरक्षक	रुपये 02.00 लाख 51.00 हजार
- संरक्षक	रुपये 01.00 लाख

तीर्थधाम चिदायतन संकुल में 206096.26 वर्ग फीट का निर्माण प्रस्तावित है। देव-शास्त्र-गुरु की उत्कृष्ट धर्मप्रभावना हेतु निर्मित हो रहे इस संकुल के निर्माण में आप एवं आपका परिवार, रुपये 2100.00 प्रति वर्ग फीट की सहयोग राशि प्रदान कर, तीर्थ निर्माण के सर्वोत्कृष्ट कार्य में सहभागी हो सकते हैं।

दानराशि में आयकर की छूट

भारत सरकार ने, श्री शान्तिनाथ-अकम्पन-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट को दान में दी जानेवाली प्रत्येक राशि पर, आयकर अधिनियम वर्ष 1961, 12-ए के अन्तर्गत धारा 80 जी द्वारा छूट प्रदान की गयी है।

नोट - आप अपनी राशि सीधे बैंक में जमा करा सकते हैं, अथवा निम्न नाम से Cheq./Draft भेज सकते हैं।

NAME	:	SHRI SHANTINATH AKAMPAN KAHAN DIGAMBER JAIN TRUST, ALIGARH
BANK NAME	:	PUNJAB NATIONAL BANK
BRANCH	:	PARIYAVALI, ALIGARH
A/C. NO.	:	7969002100000194
RTGS/NEFTS IFS CODE	:	PUNB0796900

शाश्वत् तीर्थ जन्मभूमि अयोध्या की झलकियाँ

Regn. No. : DELBIL / 2001/4685 Postal regn. No. : A.L.G. / 29 / 2021-23

मुनि बनने की भावना

सम्यग्दृष्टि की भावना तो मुनि बनने की ही होती है। वह विचारता है कि अहो! मैं कब चैतन्य में लीन होकर सर्वसङ्ग का परित्यागी होकर मुनिमार्ग में विचरण करूँ। मुनि बनकर चैतन्य के जिस मार्ग पर तीर्थङ्कर विचरे, मैं भी उसी मार्ग पर विचरण करूँ – ऐसा धन्य स्वकाल कब आयेगा? धर्मीजीव आत्मा के भानपूर्वक इस प्रकार मुनि बनने की भावना भाते हैं। ऐसी भावना होते हुए भी निज पुरुषार्थ की मन्दता और निमित्तरूप में चारित्रमोह की तीव्रता से कुटुम्बीजनों के आग्रहवश स्वयं ऐसा मुनिपद नहीं ले सके तो उस धर्मात्मा को गृहस्थपने में रहकर देवपूजा आदि षटकर्मों का पालन अवश्य करना चाहिए।

(– श्रावकधर्मप्रकाश)

पं. सं. : DELBIL/2001/4685

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक स्वप्निल जैन द्वारा **मङ्गलायतन** मुद्रणालय, आगरा रोड, अलीगढ़-202001 छपवाकर, 'विमलांचल', हरिनगर, अलीगढ़-202001 से प्रकाशित। **सम्पादक :** डॉ. सचिन्द्र शास्त्री, मङ्गलायतन।

मङ्गलायतन

श्री आदिनाथ-कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, हरिनगर, आगरारोड, अलीगढ़-202001 (उ.प्र.)

Shri Adinath-Kundkund-Kahan Digamber Jain Trust

Harinagar, Agra Road, Aligarh-202001 (U.P.)

Ph. : 9997996346, 2410010/10; Fax : 2410019/22

info@mangalayatan.com www.mangalayatan.com